विज्ञप्ति

हे प्रभो! यह तेरापंथ

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 50 : नई दिल्ली : 8-14 मार्च 2019

अहिंसा यात्रा प्रणेता, शांतिदूत, महातपस्वी, परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण केरल प्रान्त में सानंद सुखसातापूर्वक यात्रायित हैं। लाखों-लाखों वृक्षों को देखकर ऐसा लगता है कि प्रकृति इस प्रदेश पर महरबान है, किन्तु पेड़ों की बहुलता के बावजूद भी गर्मी यहां प्रखरता धारण किए हुए है। अहिंसा यात्रा अब कन्याकुमारी के सम्मुखीन बनी हुई है। धरती के छोर पर स्थित कन्याकुमारी में पूज्यप्रवर के पदार्पण को लेकर गुरुकुलवासी साधु-साध्वियों में ही नहीं, देश के विभिन्न प्रांतों में अवस्थित श्रावक-श्राविकाओं में भी उत्साह का वातावरण है। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार पूज्यप्रवर का वहां २५ व २६ मार्च का प्रवास रहेगा। आचार्यप्रवर की तमिलनाडु यात्रा के दौरान मदुरै में महावीर जयंती, ईरोड में अक्षय तृतीया और दीक्षा समारोह तथा सेलम में आचार्यप्रवर के जन्मोत्सव और पट्टोत्सव के कार्यक्रम समायोज्य हैं।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण केरल में

संकरे, किन्तु प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण मार्ग पर विहरण

२४ फरवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः पन्थामपाडम से पट्टिक्कड की ओर प्रस्थान किया। पूज्यप्रवर जिस राष्ट्रीय राजमार्ग पर गतिमान थे, उसके कुछ हिस्से में निर्माण कार्य जारी था। इस कारण पूज्यप्रवर परिपार्श्वस्थ मार्ग से पधारे। अन्य वाहन आदि भी इसी मार्ग पर गति कर रहे थे। यह मार्ग काफी संकरा था, इस कारण दोनों ओर से वाहनों के गमनागमन में कुछ कठिनाई हो रही थी। हालांकि केरल पुलिस सक्रियता के साथ पूज्यप्रवर के लिए मार्ग को प्रशस्त बनाने में जुटी हुई थी, फिर भी वाहनों को असुविधा न हो, इस दृष्टि से कहीं-कहीं पूज्यप्रवर को भी अपने चरण थामने पड़ रहे थे।

दोनों ओर हरे-भरे वृक्षों से घिरा यह मार्ग संकरा भले था, किन्तु प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण था। विहार पथ के आसपास नारियल, केला, रबर आदि के पेड़ तो हजारों की संख्या में दिखाई दे रहे थे। लाखों पेड़ों के बावजूद धूप तीव्र कड़ापन धारण किए हुए थी। पूज्यप्रवर जहां से इस संकरे मार्ग पर पधारे, वहां दृष्टिगोचर हो रहा था कि पहाड़ों के भीतर से काटकर सुरंग के रूप में राजमार्ग बनाया जा रहा है। कम दूरी वाला सुरंगरूपी राजमार्ग बन जाने के बाद वाहनों/राहगीरों के लिए काफी सुविधा हो सकेगी।

पूज्यप्रवर लगभग ११.६ कि.मी. का विहार कर पट्टिक्कड में स्थित गवर्नमेंट हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के मुख्य द्वार के परिपार्श्व में पेरेंटियल टीचर एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री सुखदेव ने पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कषायजयी बनने की प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी की जन्म शताब्दी के संदर्भ में 'संबोधि' ग्रंथ को साधु-साध्वियां और श्रावक-श्राविकाएं भी यथासंभव यथानुकूलता सीखने अथवा पढ़ने का प्रयास करें। शताब्दी वर्ष में विद्यालयों, महाविद्यालयों में जाना हो तो वहां भी 'संबोधि' की चर्चा करने का प्रयास करें, यह काम्य है। संबोधि की व्याख्या आदि के द्वारा स्वयं अपनी संबोधि को भी पुष्ट किया जा सकता है और दूसरों

में भी उसके द्वारा संबोधि का अंकुरण, पल्लवन, पुष्पन और फलन करने में निमित्त बना जा सकता है। गुरुदेव की जन्म शताब्दी पर उनके प्रति श्रद्धार्पण का भी यह एक सुन्दर माध्यम बन सकता है।'

पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त प्रवचन के अंतर्गत स्वयं द्वारा सुनाई गई कहानी और घटना को बालमुनियों से उनकी भाषा में सुना तथा उनसे मिलने वाली प्रेरणा के बारे में भी पूछा। पूज्यप्रवर ने बालसाध्वियों से भी प्रवचन से संबंधित प्रश्न पूछे।

मारवाड़ी समाज-कालीकट के अध्यक्ष श्री आलोक शाबु ने पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

विद्यालय की हेडमिस्ट्रेस जोसफिना जोसेफ ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए कहा--'देश के महान संत आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी अहिंसा यात्रा के दौरान हमारे विद्यालय में पधारे हैं। आपश्री के आगमन से हम सभी बहुत प्रसन्न हैं। यहां पदार्पण के लिए मैं आपके प्रति बहुत-बहुत आभार व्यक्त करती हूं।' पूज्यप्रवर ने विद्यालय से संबंधित लोगों को अंग्रेजी भाषा में प्रेरणा प्रदान की।

बहुश्रुत मुनिश्री राजकरणजी की स्मृति सभा

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की बहुश्रुत परिषद के सदस्य मुनिश्री राजकरणजी स्वामी का गत २० फरवरी को अनशनपूर्वक प्रयाण हो गया। आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में उनकी स्मृति सभा का उपक्रम रहा। पूज्यप्रवर ने उनके विषय में उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा--'मुनिश्री राजकरणजी स्वामी संसारपक्ष में गंगाशहर के श्यामसुखा परिवार से संबद्ध थे। विक्रम संवत १९९९ में उन्होंने करीब सत्रह वर्ष की अवस्था में परम पूज्य गुरुदेव तुलसी से मुनि दीक्षा स्वीकार की। उनके संसारपक्षीय पिता गंगारामजी भी बाद में तेरापंथ धर्मसंघ में मुनि रूप में दीक्षित हो गए थे। मुनिश्री गंगारामजी स्वामी ने श्रावक जीवन में प्रतिमा की साधना की थी। मुनि पूर्णानन्दजी मुनिश्री राजकरणजी स्वामी के संसारपक्षीय अग्रज थे। साध्वी जिनरेखाजी (गंगाशहर) और साध्वी विनयश्रीजी (श्रीडूंगरगढ़) उनकी संसारपक्षीया ज्ञाति साध्वियां हैं।

मुनिश्री राजकरणजी स्वामी को दीक्षा के करीब नौ साल बाद अग्रणी नियुक्त कर दिया गया था। वे आशु कविता भी करते थे। कहते हैं कि उन्होंने एक दिन 'महावीर सार्द्धशतक' के रूप में १५० श्लोकों तथा दस घंटों में 'भिक्षु त्रिशतकम्' की रचना कर ली। वे पांच सौ अवधान कर अर्द्धसहस्रावधानी बन गए थे। तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में तो उनकी विशिष्ट पहचान थी। गुरुदेव तुलसी के समय वे संतों को तत्त्वज्ञान के प्रश्न पूछा करते थे। उन्होंने लगभग पन्द्रह वर्षों से भी अधिक समय तक निरंतर एकान्तर तप किया। सन् २०१० के हमारे सरदारशहर चतुर्मास के दौरान मैंने उन्हें बहुश्रुत परिषद का सदस्य मनोनीत किया। उन्होंने पूर्वांचल, दक्षिणांचल आदि सुदूर क्षेत्रों की भी यात्राएं कीं। इन वर्षों में उन्हें गंगाशहर और उसके आसपास ही ज्यादा रखा गया।

विक्रम संवत २०७५ माघ शुक्ला पूर्णिमा तदनुसार १९ फरवरी २०१९ को प्रातः लगभग ११.२९ बजे उन्हें तिविहार अनशन का प्रत्याख्यान करवाया गया और उसके अगले दिन अर्थात् फाल्गुन कृष्णा एकम तदनुसार २० फरवरी २०१९ को प्रातः लगभग ८.१८ बजे उन्होंने गंगाशहर में समाधिमरण का वरण कर लिया। मैंने उनके अनशन के प्रत्याख्यान के संदर्भ में एक संदेश लिखवाया था, वह इस प्रकार है--

अर्हम

१९ फरवरी २०१९

बहुश्रुत परिषद के सदस्य मुनिश्री राजकरणजी स्वामी को तिविहार संथारा पचखा दिया गया है। यह संवाद प्राप्त हुआ है।

मुनिश्री राजकरणजी स्वामी हमारे धर्मसंघ के तत्त्वज्ञानी और धर्मसंघ के प्रति, संघपति के प्रति अच्छी भक्ति रखने वाले मुनिप्रवर हैं-ऐसा मुझे प्रतीत हुआ। उन्होंने धर्मसंघ की अनेक रूपों में सेवा की है। उनकी अनशन की साधना खूब अच्छी चले। मुनिश्री राजकरणजी स्वामी खूब आत्मस्थ रहें। मुनिश्री मुनिव्रतजी स्वामी आदि संत उन्हें खूब आध्यात्मिक, शारीरिक, मानसिक सहयोग दें। महाव्रतों की आरोपणा, आलोयणा, आदि सारे कार्य अच्छी तरह सम्पन्न हो गए होंगे अथवा हो जाएं।

मैं दक्षिण भारत में केरल प्रान्त के निकट तमिलनाडु में स्थित हूं। मैं दूर से ही मुनिश्री राजकरणजी स्वामी को भक्तिभावना से वंदन करता हूं और मुनिश्री से विनय भाव से खमतखामणा कर रहा हूं। कभी किसी प्रसंग में किंचित भी अविनय आशातना मुनिश्री राजकरणजी स्वामी की हो गई हो तो भुज्जो भुज्जो खामेमि।

मेरे पास महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी विराजमान हैं। मुख्यमुनि महावीर भी मेरे पास आसीन है। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा भी उपपात में स्थित है। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि गुरुकुलवास में स्थित साध्वियों की ओर से तथा मुख्यमुनि आदि गुरुकुलवास में स्थित संतों की ओर से खमतखामणा किया जा रहा है और मंगलकामना अर्पित की जा रही है। पुनः पुनः विनयपूर्वक वंदन।

तमिलनाडु **आचार्य महाश्रमण**

मुनिश्री राजकरणजी स्वामी हमारे धर्मसंघ के बहुत अच्छे और बहुत काबिल मुनिश्री थे। काफी ज्ञानी संत थे। उनके रूप में एक बहुश्रुत मुनिश्री का प्रयाण हो गया। उनकी आत्मा खूब उन्नति करे, मंगलकामना।'

इस अवसर पर महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने कहा--'हमारे यहां तीन प्रकार के स्थविर होते हैं--अवस्था स्थविर, पर्याय स्थविर और श्रुत स्थविर। मुनिश्री राजकरणजी स्वामी अवस्था से भी स्थविर थे, संयम पर्याय की दृष्टि से भी स्थविर थे और आगमों का अध्ययन कर श्रुत स्थविर भी बन गए थे। श्रुत स्थविर थे, इसलिए परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने उन्हें बहुश्रुत परिषद का सदस्य मनोनीत किया था। वे एक संघनिष्ठ मुनि थे और संघपति के प्रति भी समर्पित थे। उसके साथ उनमें कुछ विशिष्ट गुण भी थे। उनके संसारपक्षीय पिता मुनिश्री गंगारामजी स्वामी की दीक्षा के अवसर पर मैं भी उपस्थित थी। उस समय मैं करीब नौ वर्ष की थी। मुनिश्री राजकरणजी स्वामी के संसारपक्षीय बड़े भाई पूनमचंदजी श्यामसुखा ने परम पूज्य गुरुदेव तुलसी की दक्षिण यात्रा के दौरान काफी सेवा की थी। बाद में वे मुनि पूर्णानंदजी के रूप में तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित हो गए थे। मुनिश्री राजकरणजी तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में विशिष्ट क्षमता रखते थे। अपेक्षा है कि हमारे नए-नए संत भी तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में उन जैसी अर्हता, क्षमता को प्राप्त करें। मुनिश्री राजकरणजी स्वामी के प्रति यही मंगलकामना करती हूं कि उनका भावी जीवन वीतरागता की दिशा में और अधिक अग्रसर होता रहे।'

साध्वीवर्याजी ने कहा--'मुनिश्री राजकरणजी स्वामी की साधना उन्नत थी और उनका जीवन भी उन्नत था। उनका जीवन दूसरों को भी प्रेरणा देने वाला था। उनकी ज्ञान चेतना विशिष्ट थी और उनका तत्त्वज्ञान पुष्ट था। मैं यही मंगलकामना करती हूं कि उनकी आत्मा उत्तरोत्तर विकास करती हुई लक्षित मंजिल को प्राप्त करे।'

मुख्यमुनिश्री ने कहा--'तेरापंथ धर्मसंघ में अनेक मुनिरत्न हुए हैं। उसी शृंखला में एक थे मुनिश्री राजकरणजी स्वामी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने उन्हें बहुश्रुत परिषद का सदस्य मनोनीत किया था। उनका ज्ञान निर्मल था और तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में उनकी विशिष्ट चेतना जागृत थी। वे दूसरों को भी प्रखरता के साथ सिखाने का प्रयत्न करते थे। उनमें सिखाने की भी विशिष्ट कला विकसित थी। उन्होंने लम्बी-लम्बी पदयात्राएं कर तेरापंथ धर्मसंघ की प्रभावना में अपने पुरुषार्थ का नियोजन किया। वे अवधानी संत भी थे। उनका सौभाग्य

रहा कि उन्हें तीन-तीन आचार्यों के शासनकाल में साधना करने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने अनशनपूर्वक समाधिमरण का वरण कर अपने तीनों मनोरथों को पूर्ण किया। मैं कामना करता हूं कि उनकी आत्मा शीघ्रातिशीघ्र मोक्षश्री का वरण करे और हमेशा-हमेशा के लिए परमानंद की प्राप्ति करे।'

साध्वी चैतन्यप्रभाजी, मुनि चैतन्यकुमारजी, मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि कोमलकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि जितेन्द्रकुमारजी, मुनि अक्षयप्रकाशजी और मुनि ध्रुवकुमारजी ने मुनिश्री राजकरणजी के संदर्भ में अपनी-अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर ने मुनिश्री राजकरणजी की स्मृति सभा के अंत में उनके प्रति सम्मान का भाव अभिव्यक्त करते हुए खड़े-खड़े कहा--'मुनिश्री राजकरणजी स्वामी हमारे धर्मसंघ की बहुश्रुत परिषद के सम्माननीय सदस्य थे। उनके प्रति मैं बड़ा सम्मान का भाव व्यक्त करता हूं। उनकी आत्मा उत्तरोत्तर आध्यात्मिक प्रगति करती रहे। उनके पास जो संत थे, उन्हें सेवा का अच्छा अवसर मिला। सेवा करना बहुत अच्छी बात है। हम सभी में खूब सेवा की भावना बनी रहे। बहुश्रुत मुनिश्री राजकरणजी स्वामी के प्रति मेरी बहुत-बहुत श्रद्धांजलि।'

ईसाई प्रशिक्षुओं के बीच

सांयकालीन आहार के उपरान्त करीब ४.३० बजे परमाराध्य आचार्यप्रवर ने पट्टिक्कड से मुल्लाक्करा की ओर प्रस्थान किया। विहार के प्रारम्भ में सूर्य के आतप में कुछ तीव्रता थी, जो विहार के अंत तक प्रायः शांत बन गई। ६.५ कि.मी. का विहार कर पूज्यप्रवर मुल्लाक्करा में स्थित डॉन बोस्को हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय में प्रवेश के अवसर पर विद्यालय के प्रिंसिपल फादर जॉन पी.के. आदि ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

इस विद्यालय परिसर में ईसाई धर्म के प्रचार की दृष्टि से 'प्रिस्ट' बनने का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। बताया गया कि यह त्रिवर्षीय प्रशिक्षण 'फादर' बनने की प्रक्रिया का प्रथम चरण है। वर्तमान में इस केन्द्र में करीब ७० विद्यार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। बारहवीं कक्षा तक के अध्ययन के बाद ही यह प्रशिक्षण प्राप्त किया जा सकता है। रात्रि में विद्यालय के प्रिंसिपल फॉदर जॉन पी.के. अन्य फादर्स और प्रिस्ट बनने का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षु आचार्यप्रवर के उपपात में पहुंचे। पूज्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान की। तत्पश्चात् आचार्यप्रवर ने उन प्रशिक्षुओं की विभिन्न जिज्ञासाओं को समाहित करते हुए उन्हें जैन साधुचर्या की अवगति प्रदान की। वार्तालाप और जिज्ञासा-समाधान का क्रम अंग्रेजी भाषा में रहा।

एक प्रशिक्षु ने आचार्यप्रवर से पूछा--'आप इतनी बड़ी यात्रा कर रहे हैं। इसमें बहुत सारे लोग भी आपके साथ चलते हैं। इससे खर्चा बहुत होगा। क्यों नहीं, उन रुपयों का उपयोग गरीबों की सेवा में किया जाए, ताकि उनका भी भला हो।'

आचार्यप्रवर ने उसे समझाते हुए कहा--'रुपया एक बात है, किन्तु व्यक्तित्व निर्माण भी महत्त्वपूर्ण है। हम लोग गांव-गांव जाकर जनता को जीवन का सही मार्ग बताने का प्रयास करते हैं। यह भी तो भलाई का ही कार्य है। इससे भी तो लोगों का भला होता है। रही बात गरीबों की सेवा में उन रुपयों के उपयोग की, तुम एक बात बताओ कि तुम्हारे परिवार में किसी की शादी होती है तो खाना भी खिलाया जाता होगा और अन्य खर्च भी होता होगा?'

उसने स्वीकृति में सिर हिलाया तो आचार्यप्रवर ने उससे पूछा कि शादी में होने वाले खर्च और खाने का उपयोग गरीबों के लिए किया जाता है या नहीं?

प्रशिक्षु (सकपकाते हुए)--नहीं, यह तो नहीं होता।

आचार्यप्रवर के समाधान को सुनकर अन्य प्रशिक्षु सहमति में सिर हिलाने लगे, किन्तु उस छात्र ने पुनः

पूछा--'आज मीडिया का युग है। आप अपना संदेश मीडिया के माध्यम से भी तो पहुंचा सकते हैं, उसके लिए यात्रा की क्या आवश्यकता?'

आचार्यप्रवर ने उससे प्रतिप्रश्न किया--'तुम यहां क्यों आए हो?'

प्रशिक्षु--'मैं प्रिस्ट बनने की शिक्षा ग्रहण करने यहां आया हूं।

आचार्यप्रवर--'क्या यह शिक्षा मीडिया के माध्यम से प्राप्त नहीं की जा सकती थी? उसके लिए यहां आने और रहने की क्या आवश्यकता?'

प्रशिक्षु--'यहां हम फादर के पास अध्ययन करते हैं। उनसे सीधे सम्पर्क में रहने से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।'

आचार्यप्रवर--'हम भी यही कहना चाहते हैं कि मीडिया के माध्यम से लोगों से सीधा सम्पर्क नहीं हो पाता। सीधे सम्पर्क से लोगों में ज्यादा बदलाव आ सकता है। उसके माध्यम से व्यक्ति अपनी जिज्ञासाओं का समाधान भी आसानी से प्राप्त कर सकता है। पदयात्रा के द्वारा आम जनता से सहज मिलना हो सकता है और उसे कुछ बताया भी जा सकता है। और तो क्या यदि हम मीडिया में ही रहते तो तुम लोगों से मिलना कैसे होता?

आचार्यप्रवर का सर्तक और सटीक समाधान इस बार उपस्थित फादर्स और अन्य प्रशिक्षुओं के ही नहीं, जिज्ञासा प्रस्तुत करने वाले प्रशिक्षु के भी सीधे गले उतर गया। उनकी मुस्कुराहट और सहमति में हिलते मस्तक इसके साक्ष्य थे। पूज्यप्रवर ने उपस्थित प्रशिक्षुओं को यावज्जीवन मद्यपान न करने का संकल्प भी कराया। विद्यालय के प्रिंसिपल फादर जॉन पी.के. ने पूज्यप्रवर के प्रति आभार व्यक्त किया।

शांतिदूत आचार्यप्रवर के स्वागत में ईसाइयों द्वारा अंतर्धार्मिक सम्मेलन का आयोजन

२५ फरवरी। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर को आज प्रातः मुल्लाकारा से विहार कर करीब ११.८ कि.मी. दूर स्थित चेनकुलंगरा पधारना था। कुछ दिनों पहले आचार्यप्रवर के गत रात्रिकालीन प्रवास हेतु स्थान का अन्वेषण करते हुए कार्यकर्ता मन्नुती पहुंचे। वहां डॉन बोस्को कॉलेज के प्रिंसिपल फादर राजू चक्कनात्तु को अहिंसा यात्रा और पूज्यप्रवर के व्यक्तित्व के विषय में जानकारी दी तो वे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने कहा कि ऐसे महापुरुष हमारे विद्या संस्थान में आएं तो हमें बहुत खुशी होगी।

बाद में यात्रा कार्यक्रम ऐसा बना कि आचार्यप्रवर का गत रात्रिकालीन प्रवास मन्नुती में नहीं होकर मुल्लाकारा में हो गया। मन्नुती स्थिति डॉन बोस्को कॉलेज के प्रिंसिपल फादर राजू चक्कनात्तु की प्रबल भावना थी कि आचार्यश्री हमारे कॉलेज में आएं और उनके सान्निध्य में हम एक सर्वधर्म सम्मेलन आयोजित करें। उन्होंने इस आयोजन को निर्णीत करते हुए विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों को निमंत्रित भी कर दिया और अपने साथियों के साथ पूज्यप्रवर के स्वागत और आचार्यप्रवर के सान्निध्य में 'इन्टर रिलिजियस समिट' आयोजित करने की तैयारी भी कर ली। सोश्यल मीडिया आदि के माध्यम से इसे प्रचारित भी कर दिया।

पूज्यप्रवर को आज ११.८ कि.मी. का विहार करना था, ऐसे में उस कार्यक्रम में पधारने का अर्थ था--अत्यधिक विलम्ब होना और तीव्र धूप में लगभग १० कि.मी. चलना, किन्तु फादर राजू चक्कनात्तु की बलवती भावना को पूज्यप्रवर ने नजरंदाज नहीं किया और डॉन बोस्को कॉलेज और उस कार्यक्रम में पधारना स्वीकार किया। पूज्यप्रवर मुल्लाकारा से प्रस्थान कर करीब २.० कि.मी. दूर स्थित मन्नुती में मार्ग से कुछ दूर भीतर अवस्थित डॉन बोस्को कॉलेज परिसर में पधारे। पूज्यप्रवर के पदार्पण से उत्साहित कॉलेज के प्रिंसिपल फादर राजू चक्कनात्तु आदि ने आचार्यप्रवर का सोल्लास स्वागत किया। आचार्यप्रवर कार्यक्रम से पूर्व कॉलेज के कार्यालय परिसर में पधारे और वहां कुछ क्षण आसीन हुए।

ईसाई धर्म के एमएआर अवगिन कुरियोज व डॉ. टोनी नीलन कविल, सनातन धर्म के स्वामी शिवकान्तनंद आदि विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधि आदि भी वहां उपस्थित हो गए। आचार्यप्रवर का उनके साथ कुछ समय वार्तालाप चला। वार्तालाप के दौरान डॉन बोस्को कॉलेज के प्रिंसिपल फादर राजू चक्कनात्तु बोले--'आचार्यश्री! आपका यहां स्वागत कर हम बहुत प्रसन्न हैं। यह हमारे सौभाग्य की बात है कि आप जैसे महान व्यक्तित्व का यहां आना हुआ है।

फादर टोनी नीलन कविल ने आचार्यप्रवर से पूछा--'आप अहिंसा यात्रा कर रहे हैं?'

आचार्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा व आगामी चतुर्मासों की जानकारी प्रदान की।

फादर टोनी--'आपका हेडक्वार्टर कहां है?'

आचार्यप्रवर--'हमारा कोई हेडक्वार्टर नहीं है, कोई आश्रम नहीं है।'

समीपस्थ मुनि--'हमारा हेडक्वार्टर आचार्यश्री ही हैं।'

फादर राजू--'आपके साथ कितने मुनि हैं?'

आचार्यप्रवर--'अभी केरल में हम ३८ मुनि और ५४ साध्वियां हैं। पूरे भारत में हमारे धर्मसंघ में सैंकड़ों साधु-साध्वियां हैं।'

फादर राजू--'अहिंसा यात्रा में कितने साधु-साध्वियां साथ रहते हैं?'

आचार्यप्रवर--'यह संख्या घटती-बढ़ती रहती है। सामान्यतया ४०-५० मुनि और ५०-६० साध्वियां रहती हैं।'

फादर राजू--'आपने पूरे भारत, नेपाल और भूटान में जो अहिंसा यात्रा की है और कर रहे हैं, यह बहुत ही सुन्दर तथा महान कार्य है।'

आचार्यप्रवर के पदार्पण के संदर्भ में कॉलेज के पुस्तकालय में 'विश्व धर्म दर्शन' विभाग का भी उद्घाटन किया गया। बताया गया कि इस विभाग के अंतर्गत विभिन्न धर्मों की पुस्तकें रहेंगी। आचार्यप्रवर फादर राजू चक्कनात्तु के अनुरोध पर पुस्तकालय में पधारे। विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधि भी आचार्यप्रवर के साथ पुस्तकालय में पहुंचे। फादर राजू चक्कनात्तु ने पुस्तकालय के नए विभाग के विषय में अवगति प्रस्तुत की। तदुपरान्त आचार्यप्रवर ने फरमाया--'साहित्य ज्ञान का माध्यम बनता है। इसलिए साहित्य बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। धार्मिक साहित्य और भी अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। मैं मंगलकामना करता हूं कि यह पुस्तकालय विद्यार्थियों, शिक्षकों और अन्य लोगों के आध्यात्मिक विकास में सहायक बने।'

पूज्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण कर पुस्तकालय के नए विभाग का उद्घाटन किया गया। उसके पश्चात् परमाराध्य आचार्यप्रवर 'इण्टर रिलिजीयस समिट' के आयोजन स्थल ऑडोटोरियम में पधारे। 'ज्योतिर्गमय' नामक इस समिट के प्रारम्भ में कॉलेज की छात्राओं द्वारा पारंपरिक प्रस्तुति दी गई।

डॉन बोस्को कॉलेज के वाइस प्रिंसिपल फादर लीजो कॉलमबाडन ने आचार्यप्रवर के स्वागत में कहा--'ईश्वर की असीम अनुकंपा से परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जैसे महान संत हमारे बीच विराजमान हैं। आप जैन धर्म के तेरापंथ संप्रदाय के ग्यारहवें आचार्य हैं। आपका आंतरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व अनेक विशेषताओं से उपमित है। आगन्तुक आपके दर्शन एवं आशीर्वाद मात्र से धन्यता की अनुभूति करते हैं। मृदुभाषिता, खुला चिंतन एवं महानता आदि ऐसे शब्द हैं, जो आपके आंतरिक व्यक्तित्व को व्याख्यायित करते हैं। आपका जीवन बुद्धिमता, क्षमाशीलता, आध्यात्मिकता एवं नेतृत्वशीलता का संगम है। हम ऐसे महापुरुष का अपने कॉलेज परिसर और इस कार्यक्रम में हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करते हैं।'

तत्पश्चात् कॉलेज की ओर से आचार्यप्रवर का परिचय प्रस्तुत किया गया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अंग्रेजी भाषा में प्रदत्त अपने मंगल उद्बोधन में जैन धर्म, तेरापंथ धर्मसंघ,

साधुचर्या और अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान कर आयोजन की सफलता के लिए मंगलकामना की। चूंकि आचार्यप्रवर को काफी दूर पधारना था, इसलिए कार्यक्रम के मध्य आचार्यप्रवर ने प्रस्थान की तैयारी कर ली।

डॉन बोस्को कॉलेज के प्रिंसिपल फादर राजू चक्कनात्तु ने पूज्यप्रवर के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए कहा--'हमारे लिए बहुत सौभाग्य की बात है कि अहिंसा, नैतिकता और नशामुक्ति का संदेश लेकर आचार्यश्री महाश्रमणजी हमारी भूमि पर पधारे हैं। आप जैसे संत पुरुष से हमें जैन धर्म की वास्तविक जीवनशैली का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। आज आपके आगमन ने हमें अपने जीवन में कुछ अलग सोचने का अवसर दिया है। आपके इस अल्पकालीन प्रवास ने हमें सकारात्मक एवं रचनात्मक तरीके से जीवन जीने की प्रेरणा मिल रही है। साथ ही समाज के लोगों से रचनात्मक तरीके से सम्पर्क करने का अवसर भी प्रदान किया है।'

कार्यक्रम में उपस्थित अन्य धर्मों के प्रतिनिधियों के नाम इस प्रकार हैं--ईसाई धर्म के एमएआर अवगिन कुरियोज व डॉ. टोनी नीलन कविल, सनातन धर्म के स्वामी शिवाकान्तनन्द व इस्लाम धर्म के ओनमपल्ली मुहम्मद फैजी।

पूज्यप्रवर के पदार्पण से विद्या संस्थान हर्षविभोर था। आचार्यप्रवर ने कॉलेज से गंतव्य की ओर प्रस्थान किया। कॉलेज के बाहर मन्नुती से करीब आठ कि.मी. दूर स्थित त्रिशूर प्रवासी एक तेरापंथी परिवार ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए और निवेदन किया कि हमारी दुकान मन्नुती में ही है। आचार्यप्रवर ने उस परिवार को वहीं से मंगलपाठ सुनाया। राजलदेसर का वह गिड़िया परिवार गत दो दिनों से पूज्यप्रवर की उपासना में लीन है।

मन्नुती से पलियक्करा तक की आचार्यप्रवर की यात्रा प्रायः चिलचिलाती धूप में ही हुई, किन्तु पूज्यप्रवर का समत्व भाव अविचलित था। करीब ११.५५ बजे आचार्यप्रवर पलियक्करा में स्थित चेनकुलंगरा भद्रकाली मंदिर में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। यहां पधारने तक आचार्यप्रवर ने प्रातराश भी नहीं किया था। पूज्यप्रवर प्रातराश कर कुछ ही क्षणों में मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पधार गए।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में आत्मा को ही आत्मा की मित्र/शत्रु बताते हुए दुष्प्रवृत्तियों से बचने व सत्प्रवृत्तियों में संलग्न रहने की प्रेरणा प्रदान की।'

श्री भगवती टेंपल के ज्वाइंट सेक्रेट्री मिस्टर बिज्जू ने कहा--'तीन महान उद्देश्यों के साथ अहिंसा यात्रा लेकर निकले जैन धर्म के महान संत आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी यात्रा के साथ आज हमारे इस मंदिर परिसर में पधारे हैं। हमारे परिसर में आप जैसे महापुरुष के चरणों का स्पर्श होना और आपसे पावन प्रेरणा व आशीर्वाद प्राप्त होना हम सभी के लिए सौभाग्य की बात है। मुझे आपके निकटता से दर्शन और आशीष प्राप्त कर तथा आपके स्वागत में बोलने का सुअवसर प्राप्त कर मैं स्वयं को धन्य मानता हूं। आप यहां पधारे, उसके लिए हम सभी आपके प्रति कृतज्ञ हैं। पुनः आपके चरणों में हमारी अनंत-अनंत वंदना।'

अहिंसा यात्रा प्रणेता के आगमन से अभिभूत विद्यालय परिवार

सायंकाल करीब पांच बजे पूज्यप्रवर पलियक्करा से नन्दीक्करा की ओर प्रस्थित हुए। आज सूर्य के आतप में भी तीव्रता काफी कम थी और मंद-मंद हवा भी बह रही थी। इस कारण वातावरण काफी सुहावना बना हुआ था। मार्ग के आसपास कहीं-कहीं पाइनएप्पल की खेती भी दिखाई दे रही थी।

पूज्यप्रवर नन्दीक्कारा गांव में मार्ग से करीब आधा कि.मी. भीतर स्थित श्री रामकृष्ण विद्या निकेतन पब्लिक स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय ट्रस्ट के चेयरमेन श्री एन.पी.मुरली, ट्रस्टी श्री के. दिनेशन, ज्वाइंट सेकेट्री के.एस. सुगेश, मैनेजर श्री के. विजयन आदि लोग राजमार्ग पर

पूज्यप्रवर की अगवानी में पहुंच गए थे। विद्यालय के मुख्य द्वार पर विद्यालय की शिक्षिकाएं आचार्यप्रवर के स्वागत में आरती का थाल और दीपक लिए खड़ी थीं। पूज्यप्रवर के पधारते ही उन्होंने अपनी परंपरानुसार आरती कर पूज्यप्रवर का स्वागत किया। विद्यालय से संबंधित शिक्षक आदि लोग मुख्य द्वार से विद्यालय की इमारत तक दोनों ओर कतारबद्ध व करबद्ध खड़े थे। पूज्यप्रवर उनके श्रद्धा भावों को स्वीकार करते हुए इस इमारत में पधारे। बताया गया कि सन् २०१८ के अगस्त माह में केरल में आई बाढ़ के दौरान इस विद्यालय में काफी पानी आ गया था।

आचार्यप्रवर के पदार्पण से विद्यालय परिवार अभिभूत था। कार्यकर्ताओं ने जब विद्यालय ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री के. दिनेशन से मिलकर उन्हें आचार्यप्रवर और अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति दी तो आचार्यप्रवर के व्यक्तित्व और मिशन से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने पूज्यप्रवर के प्रवास हेतु अपने विद्यालय को देने की सहर्ष स्वीकृति तो दी ही, कई अन्य पड़ावों की व्यवस्थाओं में भी सहयोग किया। वे आगे भी कई दिनों तक पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आते रहे तथा यात्रा व्यवस्था में अपना सहयोग देने के लिए भी कार्यकर्ताओं के साथ कई स्थानों में भी गए। उन्होंने अपने कई स्वजनों, मित्रों व परिचितों को भी पूज्यप्रवर के दर्शन करवाए।

आसक्ति से बचें

२६ फरवरी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज प्रातः नन्दीक्कारा से पेरम्बरा की ओर प्रस्थान किया। विद्यालय के ट्रस्टी श्री के. दिनेशन आदि ने पूज्यचरणों में अपने कृतज्ञ भाव अर्पित किए और काफी दूर तक पूज्यप्रवर के साथ-साथ पैदल चले। आज विहार पथ के आसपास हजारों पेड़ दृष्टिगोचर हो रहे थे। यहां के प्रायः घरों के परिसरों में भी वृक्ष दिखाई देते हैं। आम के वृक्षों पर अब केरियां भी नजर आने लगी हैं।

मार्ग में पाली के एक बावरी परिवार ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। परिवार के सदस्यों ने बताया कि वे यहां मूर्तियों का निर्माण करते हैं। आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन प्रेरणा प्रदान की। श्री रामकृष्ण विद्या निकेतन पब्लिक स्कूल के ट्रस्टी श्री के. दिनेशन ने पूज्यप्रवर से अपने दुकान में पधारने की प्रार्थना की तो पूज्यप्रवर राजमार्ग के प्रायः समानान्तर बने भीतरी मार्ग से पधारे। श्री के. दिनेशन ने अपनी दुकान के समीप अपने स्टाफ के साथ पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगलपाठ सुनाते हुए मंगल आशीष प्रदान की। मार्ग के समीप कुछ मजदूर खड़े दिखाई दिए तो आचार्यप्रवर ने अपने चरण उनकी ओर बढ़ा दिए और उन्हें नशामुक्ति की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर करीब ६.० कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर पेरम्बरा में पधारे। सेंट लियोबा एकेडमी इंग्लिश मिडियम स्कूल में आज सायं तक का प्रवास रहा। विद्यालय की प्रिंसिपल सिस्टर विनेया ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में अति आसक्ति से बचने हेतु उत्प्रेरित किया।

विद्यालय की प्रिंसिपल सिस्टर विनेया ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा--'महात्मा महाश्रमण को आज अपने विद्यालय में पाकर मैं प्रसन्नता की अनुभूति कर रही हूं। आप अपनी पैदल यात्रा से संपूर्ण मानव जाति को एक महान संदेश दे रहे हैं। जो भी व्यक्ति आपके प्रवचनों और उपदेशों को सुनता है, उसके लिए आपकी वाणी का शब्द-शब्द प्रेरणास्रोत है। आपका जीवन, आपका अनुभव और आपका सब कुछ मानव जाति के लिए समर्पित है। आपकी आगे की यात्रा मंगलमय हो, ऐसी कामना करती हूं।' पूज्यप्रवर ने उन्हें अंग्रेजी भाषा में प्रेरणा प्रदान की।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने सांयकालीन आहार के पश्चात् लगभग पांच बजे पेरम्बरा से चलक्कुडी की ओर प्रस्थान किया। विहार के दौरान चलक्कुडी के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से

लाभान्वित हुए। आचार्यप्रवर करीब ६.० कि.मी. का विहार कर चलक्कुडी में पधारे। एन.एस.डी.पी. ऑडिटोरियम में आज का रात्रिकालीन प्रवास हुआ। ऑडिटोरियम के ऑनर श्री उन्नी कृष्णन आदि ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

दुःख का कारण है कामना

२७ फरवरी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः चलक्कुडी से कोटाकुलंगरा की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में करोट्टी के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। किसर नदी पर बना पुल विहार के दौरान पूज्यचरणों से पावनता को प्राप्त हुआ। जिला पंचायत सदस्य एडवोकेट श्री के.आर. सुमेश ने मार्ग में पूज्यप्रवर के दर्शन किए। उन्होंने केरल में पदार्पण के संदर्भ में पूज्यचरणों में अपने कृतज्ञ भाव अर्पित किए तथा पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'केरल में गत वर्ष आई बाढ़ के दौरान राहत कार्यों में आपकी संस्थाओं ने हमारा बहुत सहयोग किया।'

आचार्यप्रवर ने आज त्रिशूर जिले से एर्नाकुलम जिले में प्रवेश किया। पूज्यप्रवर करीब १२.५ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर कोटाकुलंगरा में स्थित श्री भद्रा ऑडिटोरियम में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। ऑनर श्री मुगुलनेर ने अपने स्थान में पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए श्रीचरणों में अपनी श्रद्धासिक्त प्रणति अर्पित की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में कामना को दुःख का कारण बताते हुए उसके संयम की प्रेरणा प्रदान की।

आज मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के पश्चात कुछ पंजाबी और जैन दम्पति परम पूज्य आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। उनमें से एक पंजाबी महिला ने आचार्यप्रवर से निवेदन किया--'हम टीवी पर तो आपके प्रवचन प्रतिदिन सुनते हैं और आज सुबह भी आपका प्रवचन सुना था। आज आपके साक्षात दर्शन कर हम लोग धन्यता की अनुभूति कर रहे हैं। आचार्यप्रवर ने उन लोगों को उपासना का अवसर प्रदान करते हुए मंगल प्रेरणा प्रदान की।

स्थान की अनुकूलता को ध्यान में रखते हुए पूज्यप्रवर सायंकाल कोटाकुलंगरा से प्रस्थान कर करीब ४०० मीटर दूर स्थित अरामाली में स्थित डॉन बोस्को जूनियर स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के प्रिंसिपल मार्टिन कुरुवन मार्कल आदि ने आचार्यप्रवर का सादर स्वागत किया।

दुष्प्रवृत्तियों का मूल है लोभ

२८ फरवरी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः अरामाली से देसोम आलवा की ओर प्रस्थान किया। वेपलासेरी के ग्राम्यजन विहार के दौरान पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। केरल के इस क्षेत्र में राष्ट्रीय राजमार्ग के दोनों ओर प्रायः निरंतर दुकानें, शोरुम्स, घर आदि बने हुए हैं। भव्य शोरुम्स, दुकानें तथा उनके बड़े-बड़े विज्ञापन स्थानीय जनता की समृद्धि को दर्शाते हुए-से प्रतीत हुए। राजमार्ग सुबह-सुबह ही यातायात की अधिकता लिए हुए दिखाई दे रहा था। तमिलनाडु की तरह केरल की जनता में भी सिनेमा में प्रति विशेष आकर्षण अनुमानित हुआ। विभिन्न फिल्मों के प्रचार हेतु जगह-जगह खड़े बड़े-बड़े होर्डिंग्स उस अनुमान के कारण थे। लगभग १०.५ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर देसम आलवा में स्थित श्री दत्ता अंजनेय मंदिर परिसर में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। मंदिर के मुख्य पुजारी श्री मारुति कुमार शर्मा आदि ने कुछ दूर सामने आकर पूज्यप्रवर की अगवानी की।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में लोभ से बचने की

प्रेरणा प्रदान की।

मंदिर के मुख्य पुजारी श्री मारुति कुमार शर्मा ने कहा--'हमारे इस मंदिर परिसर में मैं आचार्यश्री महाश्रमणजी का हार्दिक अभिनन्दन करता हूं। आचार्यश्री अपनी इस अहिंसा यात्रा के माध्यम से जनता में जिन संदेशों को संप्रसारित कर रहे हैं, वे केवल जैन धर्म के लोगों के लिए नहीं हैं, अपितु संपूर्ण मानव समाज के लिए लाभदायक हैं। अहिंसा यात्रा आज के युग की मांग है। वर्तमान में भारत देश के काफी लोग मांसाहार कर रहे हैं। इस मामले में केरल और तेलंगाना सर्वोपरि है। हम केरलवासी मांसाहार के कारण दैनिक हिंसा से जुड़े हुए हैं। ऐसे में आचार्यश्री महाश्रमणजी की अहिंसा यात्रा और अहिंसा के संदेश ही इस प्रान्त को अहिंसक बना सकते हैं। आज लोगों को अहिंसा के विषय में जागरूक करने की आवश्यकता है और यह जागरूकता आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे संत ही ला सकते हैं। आपकी इस प्रान्त में उपस्थिति और आपके उपदेशों से यहां की जनता के व्यवहार में अहिंसा अवश्य अवतरित होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।'

आचार्यप्रवर ने उन्हें अंग्रेजी भाषा में पावन प्रेरणा प्रदान की।

सायंकाल करीब छह बजे आचार्यप्रवर देसोम आलवा से आलवा की ओर प्रस्थित हुए। किसी उत्सव के संदर्भ में एक घर में लोकनृत्य का अभ्यास कर रही महिलाओं ने आचार्यप्रवर को पधारते देखा तो उन्होंने पूज्यप्रवर को वंदन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। प्राप्त जानकारी के अनुसार केरल में करीब ४४ नदियां बहती हैं। विहार के दौरान पूज्यप्रवर का परियाद (कलुआ) नदी के पुल पर पदार्पण हुआ। करीब १.६ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर आलवा स्थित नम्बोरिमाडम ऑडिटोरियम में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

अरब सागर के किनारे आया अध्यात्म का महासागर

१ मार्च। परम पावन आचार्यप्रवर प्रातः आलवा से कोच्चि की ओर प्रस्थित हुए। यद्यपि कोच्चि में पूज्यप्रवर का दो दिन का ही प्रवास पूर्व निर्धारित था, किन्तु संयोग ऐसा बना कि पूज्यप्रवर का एक दिन पूर्व ही कोच्चि शहर में प्रवेश हो गया। कोच्चिवासी इस एक दिन की अभिवृद्धि से उत्फुल्ल बने हुए थे। कोच्चि में अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है, इस कारण लोगों के पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुंचने में सुविधा हो गई। चेन्नई, बेंगलुरु, हैदराबाद आदि के लोग तो बड़ी संख्या में कोच्चि पहुंच गए। भारत के अन्य शहरों से भी काफी लोग पूज्य सन्निधि में उपस्थित हो गए।

आबादी, दुकानों और शोरुम्स आदि की निरंतरता के कारण यह ज्ञात ही नहीं हुआ कि पूज्यप्रवर का कोच्चि शहर में प्रवेश कब हो गया। कोच्चि को कोचीन भी कहा जाता है। 'एर्नाकुलम' की सीमा कोच्चि से अभिन्न-सी बनी हुई है, इसलिए कई लोग कोच्चि को एर्नाकुलम भी कहते हैं। अरब सागर के किनारे स्थित यह शहर एक बन्दरगाह भी है। मसालों के व्यापार केन्द्र के रूप में यह शहर प्रसिद्धि को प्राप्त है। बताया गया कि केरल में काली मिर्च, इलायची, सौंठ, लवंग, दालचीनी, जावंत्री, जायफल आदि विभिन्न मसालों का उत्पादन प्रचुर मात्रा में होता है। इन मसालों का न केवल भारत के विभिन्न प्रांतों में विक्रय होता है, अपितु भारत के बाहर भी बड़ी मात्रा में इनका निर्यात होता है। कोच्चि भारतीय नौसेना के दक्षिणी नौसैनिक कमान का केन्द्र भी है। यह शहर स्वच्छता और सुन्दरता के क्षेत्र में भी अपनी पहचान रखता है। यह एक विकसित या तीव्र गति से विकास करता हुआ शहर प्रतीत हुआ। इस शहर में मेट्रो की सुविधा भी उपलब्ध है। राजमार्ग पर ही मेट्रो के पुल निर्मित हैं तथा प्रायः प्रति तीन किलोमीटर के बाद मेट्रो स्टेशन बने हुए हैं।

मेट्रो स्टेशन्स के आसपास खड़े ऑटो चालकों को भी आज पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। मार्ग के दायीं ओर स्थित विशाल 'लुलु मॉल' के विषय में जानकारी दी गई कि

यह हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा मॉल है। कुछ ही दूरी पर विशाल चर्च भी दिखाई दे रहा था। उसके विषय में बताया गया कि यह केरल का सबसे बड़ा और सबसे पुराना चर्च है।

लगभग १३.५ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर कोच्चि के इडापल्ली में स्थित श्री पदमचन्द, उम्मेदमल, रणजीतकुमार, प्रथम भण्डारी परिवार के नवनिर्मित निवास स्थान में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। इस सुदूर प्रदेश में अपने आराध्य का एक दिवसीय प्रवास अपने नए निवास स्थान में पाकर ईडवा का भण्डारी परिवार कृतार्थता की अनुभूति कर रहा था।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में ईमानदारी को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आज ईड़वा के भण्डारी परिवार के यहां हमारा आना हुआ है। ईड़वा के और उसके आसपास के कई लोग यहां पहुंच गए हैं। सभी अच्छी धार्मिक आराधना करते रहें।'

कार्यक्रम के दौरान श्री रणजीत भण्डारी, श्री विनोद सुराणा, श्री सुभाष सुराणा, सुश्री दीपिका भण्डारी व खुशबू भण्डारी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी आस्थासिक्त प्रस्तुति दी। भण्डारी परिवार की कन्याओं ने स्वागत गीत का संगान किया तथा पूज्यप्रवर के अभिनन्दन में अपनी कलाकृति प्रस्तुत की।

अहिंसा यात्रा प्रणेता के स्वागत में उमड़ा कोच्चि का जैन एवं जैनेतर समाज

२ मार्च। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः कोच्चि के इडापल्ली से कोच्चि में ही स्थित कडवन्द्रा की ओर प्रस्थित हुए। यों तो गत कल ही पूज्यप्रवर का कोच्चि में प्रवेश हो गया था, किन्तु आज पूज्यप्रवर पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार द्विदिवसीय प्रवास हेतु प्रवेश कर रहे थे। पूज्यप्रवर के पदार्पण से कोच्चिवासी श्रद्धालुओं के उत्साह और उल्लास मानों चरम पर थे। करीब आधी सदी बाद अपने आराध्य को अपनी कर्मभूमि में पाकर श्रद्धालुजन अतिशय आह्लादित थे। अन्य जैन समाज और जैनेतर समाज के लोग भी पूज्यप्रवर के स्वागत में सोल्लास उपस्थित थे।

पूज्यप्रवर तेरापंथ भवन के निर्माण के लिए निर्धारित तेरापंथी सभा-कोच्चि की जमीन पर पधारने के लिए मार्ग से कुछ भीतर पधारे। जमीन के आसपास मार्गस्थ हरियाली के कारण पूज्यप्रवर जमीन पर तो नहीं पधार पाए, किन्तु दूर से ही श्रद्धालुओं को मंगलपाठ सुनाया और पुनः मूल मार्ग पर पधार गए।

पूज्यप्रवर के स्वागत में पलक पांवड़े बिछाए खड़े कोच्चिवासियों की विशाल उपस्थिति से स्वागत जुलूस ने भव्य रूप धारण कर लिया। जैन धर्म और जैन साधुचर्या से अनजान लोगों के लिए यह जुलूस कुतूहल का विषय बना हुआ था, किन्तु आचार्यप्रवर और अहिंसा यात्रा के विषय में जानकारी प्राप्त कर अपरिचित दर्शकों के हृदय में भी श्रद्धा के अंकुर प्रस्फुटित हो रहे थे। यही कारण था कि अनेक लोग अपनी-अपनी परंपरा के अनुसार पूज्यप्रवर का अभिवादन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे। करीब ६.४ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर परम पूज्य आचार्यप्रवर कोच्चि के ही कडवन्द्रा में स्थित राजीव गांधी इंडोर स्टेडियम में पधारे। पूज्यप्रवर का द्विदिवसीय प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का उद्बोधन हुआ।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में अनुकूलता और प्रतिकूलता दोनों स्थितियों में समत्वलीन रहने की प्रेरणा प्रदान की।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित कोच्चि के जैन एवं जैनेतर लोगों ने आचार्यप्रवर की प्रेरणा से अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए।

तेरापंथ समाज-कोच्चि द्वारा स्वागत गीत का संगान किया गया। तेरापंथी सभा-कोच्चि के अध्यक्ष श्री रतनलाल बाफना व मूर्तिपूजक समाज-कोच्चि के अध्यक्ष श्री नवरतनमल पोरवाल ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा पूज्यचरणों में अपनी विनयांजलि अर्पित की।

मद्रास उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री नारायण कुरुप ने अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी के मंगल सान्निध्य में आकर मैं गौरव की अनुभूति कर रहा हूं। जैन धर्म शांति प्रधान धर्म है, जो संपूर्ण जगत में शांति की स्थापना पर बल देता है। आचार्यश्री की अहिंसा यात्रा शांति का संदेश लेकर ही गतिमान है। हमारा भारतीय संविधान जिस करुणा की बात करता है, भगवान महावीर ने वर्षों पूर्व वह संदेश मानव जाति को दिया था। आचार्यश्री उसी करुणा का संदेश जन-जन तक प्रसारित कर रहे हैं। मैं जन्म से जैन नहीं हूं, किन्तु कर्मणा जैन बनकर न्यायिक सेवा के माध्यम से अपने क्षेत्र में नशामुक्ति का प्रयास कर रहा हूं।'

केरल उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री वी.जे. मैथ्यू ने कहा--'राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाश्रमणजी का मैं केरल की धरती पर हार्दिक स्वागत-अभिनन्दन करता हूं। यह एक अत्यन्त सुखद समय है, जब आचार्यश्री स्वयं हमारे बीच पधारे हैं। हम सभी केरलवासी आपके और आपके अनुयायियों सहित पूरे जैन समाज के प्रति कृतज्ञ हैं, जिन्होंनें हम सभी को बाढ़ जैसी आपदा में अपना सहयोग प्रदान किया। जैन तेरापंथ समाज ने बाढ़ पीड़ितों के लिए प्रधानमंत्री राहत कोष में जो सहयोग राशि प्रदान की, उसके लिए मैं संपूर्ण केरलवासियों की ओर से आभार प्रकट करता हूं। आचार्यश्री की आगामी केरल यात्रा भी सुखमय रहे, आनंदमय रहे, ऐसी मैं मंगलकामना करता हूं।'

एर्नाकुलम विधानसभा क्षेत्र के भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री सी.जी. राजगोपाल मुथू ने कहा--'भारतीय संत परंपरा के महान संत आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरणों की वंदना करता हूं। यह मेरा सौभाग्य है कि भगवान की कृपा से मुझे इस धर्मसभा में उपस्थित होने, ऐसे महान संत के दर्शन करने और स्वागत करने का अवसर प्राप्त हुआ है। आज कोच्चि को स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ है कि भारत देश के जैन शासन के महागुरु यहां आए हैं और हम सभी को अपना पावन आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं। मैं राजनीति के माध्यम से अपने देश और समाज के लिए अच्छा कार्य करना चाहता हूं। इसके लिए मुझे आपश्री के आशीर्वाद की आवश्यकता है। मैं कोच्चि का नागरिक होने के नाते एक बार पुनः आपका अपने नगर में हार्दिक स्वागत-अभिनन्दन करता हूं।'

नवीन घोषित चतुर्मास

मुनिश्री संजयकुमारजी, मुनि प्रसन्नकुमारजी	उदयपुर
मुनिश्री सुरेशकुमारजी	देवगढ़
मुनि अर्हत्‌कुमारजी	हैदराबाद
मुनि भूपेन्द्रकुमारजी	सादुलपुर
साध्वी पुण्यप्रभाजी	बालोतरा
साध्वी सोमयशाजी	मिलाप भवन, जयपुर
साध्वी प्रतिभाश्रीजी	आदर्श नगर, सवाईमाधोपुर
साध्वी शुभप्रभाजी	जयपुर

साध्वी मंजुप्रभाजी	टोहाणा
साध्वी राकेशकुमारीजी	मालेगांव
साध्वी सूरजप्रभाजी	कालांवाली
साध्वी भानुकुमारीजी	असाढ़ा
साध्वी रामकुमारीजी (लाडनूं)	पचपदरा
साध्वी साधनाश्रीजी	पुर
साध्वी रविप्रभाजी	शालीमारबाग, दिल्ली
साध्वी प्रसन्नयशाजी	केलवा
साध्वी संपूर्णयशाजी	गंगापुर
साध्वी धनश्रीजी	सुजानगढ़

महाप्रज्ञ श्रुताराधना पाठ्यक्रम

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने १५५वें मर्यादा महोत्सव के अवसर पर 'धर्मसंघ के नाम संदेश' में महाप्रज्ञ श्रुताराधना पाठ्यक्रम का उल्लेख किया गया था। प्रस्तुत है उसकी रूपरेखा-

नाम - महाप्रज्ञ श्रुताराधना पाठ्यक्रम

विद्यार्थी योग्यता

१. जन्म दिनांक से अथवा जन्म तिथि से १३ वर्ष पार तथा संयम जीवन की दिनांक अथवा तिथि से २ वर्ष पार साधु, साध्वियां व समण-समणियां ही इस पाठ्यक्रम के विद्यार्थी बन सकेंगे।
२. इस पाठ्यक्रम में भाग लेने के इच्छुक साधु, साध्वियां व समण-समणियां आचार्यप्रवर से स्वीकृति प्राप्त होने के बाद ही इसमें संभागी बन सकेंगे।

पाठ्यक्रम अवधि

१. पाठ्यक्रम शिक्षण सात वर्षों का होगा। कोई सात वर्षों का पाठ्यक्रम पूरा न कर सके तो जितना चाहे उतना कर सकेगा।
२. शिक्षण का वर्ष क्रम सामान्यतया मृगसर कृष्णा प्रथमा से कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा तक रह सकेगा।

पाठ्यक्रम अध्यापन व्यवस्था

१. विद्यार्थी को स्वयं अपने अध्यापकों का चयन करना होगा। विद्यार्थी साधु साधुओं से अथवा गृहस्थ पुरुषों से तथा साध्वियां साध्वियों, समणियों, मुमुक्षु बहिनों अथवा अन्य महिलाओं से पढ़ सकेंगी। यदि इसमें विपर्यास करना आवश्यक हो तो आचार्यप्रवर से निवेदन कर स्वीकृति प्राप्त करने का प्रयास किया जा सकता है।
२. किसी विद्यार्थी साधु को पढ़ाने वाला व्यक्ति नहीं मिले तो वह आचार्यप्रवर को निवेदन कर सकता है। इसी प्रकार साध्वियां व समणियां साध्वीप्रमुखाजी तक अपनी बात पहुंचा सकती हैं। साध्वीप्रमुखाजी अपेक्षानुसार इस विषय में आचार्यप्रवर से निर्देशन-पथदर्शन प्राप्त कर सकेंगी।

पाठ्यक्रम-

सात वर्षों का पाठ्यक्रम इस प्रकार रहेगा-

१. प्रथम वर्ष

- **कंठस्थ-** दसवेआलियं, लघुदण्डक, गतागत, बावन बोल
- **वाचन-** दसवेआलियं, शील की नवबाड

२. द्वितीय वर्ष

- **कंठस्थ-** उत्तरज्झयणाणि (संपूर्ण), बासठिया (इक्कीस द्वार)
- **वाचन-** उत्तरज्झयणाणि, आचारांग भाष्यम्, आयारचूला, निसीहज्झयणं

३. तृतीय वर्ष

- **कंठस्थ-** जैन तत्त्व प्रवेश भाग-१
- **वाचन-** ववहारो, कप्पो, दसाओ, अणुओगदाराइं

४. चतुर्थ वर्ष

- **वाचन-** पण्णवणा, सूयगडो, समवाओ, ठाणं

५. पंचम वर्ष

- **वाचन-** नायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, आचार्य भिक्षु तत्त्व साहित्य भाग-१, व्रताव्रत री चौपई, इन्द्रियवादी री चौपई

६. षष्ठ वर्ष

- **कंठस्थ-** गमा का थोकड़ा
- **वाचन-** भगवती भाष्य (सम्पूर्ण)

७. सप्तम वर्ष

- **वाचन-** ओवाइयं, रायपसेणियं, जीवाजीवाभिगमे, जंबुद्दीवपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, चंदपण्णत्ती, मिथ्याती री करणी री चौपई। इस संपूर्ण पाठ्यक्रम में निर्धारित आगमों व थोकड़ों की वाचिक प्रस्तुति का अभ्यास, इस संपूर्ण पाठ्यक्रम में निर्धारित आचार्य भिक्षु के ग्रन्थों में वर्णित दान, दया आदि सिद्धान्तों की वाचिक प्रस्तुति का अभ्यास।

पाठ्यक्रम परीक्षा

१. सामान्यतया वर्ष में एक बार कार्तिक महीने में परीक्षा होगी। एक कार्तिक महीने में अनेक वर्षों की परीक्षा एक साथ नहीं दी जा सकेगी। सात वर्षों की परीक्षा के लिए कम से कम सात वर्ष लगाने ही होंगे। परीक्षा गुरुकुलवास और बहिर्विहार दोनों जगह अपेक्षानुसार समायोजित की जा सकेगी।

२. प्रत्येक वर्ष के प्रथम प्रश्न पत्र की परीक्षा कार्तिक शुक्ला ३, द्वितीय प्रश्न पत्र की परीक्षा कार्तिक शुक्ला ६, तृतीय प्रश्न पत्र की परीक्षा कार्तिक शुक्ला ९ और चतुर्थ प्रश्न पत्र की परीक्षा कार्तिक शुक्ला १२ को यथासंभव हो सकेगी। कोई तिथि दो होगी तो प्रथम तिथि को परीक्षा हो सकेगी। पिछले वर्ष में किसी प्रश्न पत्र में कोई विद्यार्थी असफल रहा हो और वह अगले वर्ष की परीक्षा भी दे रहा हो तो उसके लिए उस प्रश्न पत्र की परीक्षा निर्धारित उस प्रश्न पत्र की तिथि से एक दिन पहले हो सकेगी, जैसे-

पिछले वर्ष के प्रथम पत्र की परीक्षा कार्तिक शुक्ला २ को हो सकेगी। तिथि संबंधी कोई कठिनाई आने पर अन्य तिथि भी निर्धारित की जा सकेगी।

३. एक दिन की परीक्षा में लगभग ३ घंटों का समय दिया जाएगा। उससे ज्यादा नहीं। गुरुकुलवास में एक ही मकान में एक स्थान में सन्त और दूसरे स्थान में साध्वियां परीक्षा दे सकेंगी।

४. परीक्षा का समय यथासंभव दिन में लगभग १२ बजे से ३ बजे तक का रहेगा।

५. परीक्षा दिन में ही हो सकेगी, रात्रि में नहीं।

६. सौ-सौ अंकों के चार प्रश्न पत्र होंगे। एक प्रश्न पत्र में पांच प्रश्न होंगे। प्रश्न का विकल्प नहीं होगा। प्रत्येक प्रश्न बीस अंकों का होगा।

७. कंठस्थ के सिवाय जो वाचनीय आगम हैं, उनका प्राकृत पाठ व संस्कृत छाया का अध्ययन करना अवश्यक नहीं है। परीक्षा में उनसे संबंधित कोई प्रश्न नहीं होगा। मात्र अनुवाद व टिप्पण अथवा भाष्य पठनीय हैं, परीक्षणीय हैं।

८. उत्तीर्ण होने के लिए प्रत्येक प्रश्न पत्र में कम से कम ६० अंक लेना अनिवार्य होगा। किसी प्रश्न पत्र में कोई विद्यार्थी ६० से कम अंक प्राप्त करेगा तो उस प्रश्न पत्र की दुबारा परीक्षा अगले वर्ष कार्तिक महीने में ही हो सकेगी। बीच में उसकी परीक्षा नहीं होगी।

९. अगली कक्षा का प्रवेश निर्देशक चारित्रात्मा की स्वीकृति मिलने के बाद ही होगा।

१०. प्रश्न पत्र, उत्तर पुस्तिका और डेस्क आदि सामग्री की समुचित व्यवस्था यथासंभव परीक्षा व्यवस्थापक चारित्रात्माओं द्वारा की जाएगी। लिखने की पेंसिल आदि सामग्री विद्यार्थी साधु-साध्वी को स्वयं को लानी होगी। साधुओं के निरीक्षण के लिए साधु और साध्वियों के निरीक्षण के लिए साध्वी/समणी रहेगी।

सम्मान और व्यवस्था

१. इस सप्तवर्षीय पाठ्यक्रम को जो सफलता के साथ सम्पन्न कर देगा, उस साधु-साध्वी को अग्रणी बनाने में यथासंभव प्राथमिकता दी जाएगी।

२. इस सप्तवर्षीय पाठ्यक्रम में सफलता प्राप्त करने वाले साधु को 'श्रुताराधक' और साध्वी को 'श्रुताराधिका' का सम्मान प्राप्त करने के लिए अर्ह माना जाएगा। अध्ययन समाप्ति के बाद मर्यादा महोत्सव के मुख्य समारोह में उन्हें सम्मानित किया जा सकेगा।

३. परीक्षा के दिन शुरू होने से सात दिन पहले से परीक्षा की सम्पन्नता के दिन तक संबद्ध विद्यार्थी साधु-साध्वियों को समुच्चय के कार्यों से पूर्णतया मुक्त रखा जा सकेगा। अन्य कोई सुविधा भी उन्हें अपेक्षित होने पर वे बड़ों से निवेदन कर सकेंगे। यथौचित्य उस पर भी ध्यान दिया जा सकेगा।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
Date of Publication : 11-03-2019
L.No.-U (C) 200/2018-2020
(Page 1-16)
Licence to Post without Pre-payment
8-14 मार्च 2019
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

प्रश्न पत्र व्यवस्था

वर्ष	प्रथम प्रश्न पत्र	द्वितीय प्रश्न पत्र	तृतीय प्रश्न पत्र	चतुर्थ प्रश्न पत्र
प्रथम	दसवेआलियं (कंठस्थ)	दसवेआलियं (वाचन)	लघुदण्डक, गतागत, बावन बोल (कंठस्थ)	शील की नवबाड (वाचन)
द्वितीय	उत्तरज्झयणाणि (कंठस्थ)	mÙkjT> ; .kkf.k] आयारचूला (वाचन)	बासठिया(२१ द्वार) (कंठस्थ), आचारांग भाष्यम् (वाचन)	निसीहज्झयणं (वाचन)
तृतीय	जैन तत्त्व प्रवेश भाग-१ (कंठस्थ)	ववहारो, कप्पो (वाचन)	अणुओगदाराइं (वाचन)	नंदी, दसाओ (वाचन)
चतुर्थ	पण्णवणा (वाचन)	सूयगडो (वाचन)	समवाओ (वाचन)	ठाणं (वाचन)
पंचम	नायाधम्मकहाओ, mokn l kv ks¼ok pu½	नवपदार्थ (वाचन) ¼v kp k; Z fHk{kq r Ùo साहित्य भाग-१)	व्रताव्रत री चौपई ¼ok pu½	अनुकंपा री चौपई (आचार्य भिक्षु तत्त्व साहित्य भाग-१), इन्द्रियवादी री चौपई (वाचन)
षष्ठ	भगवती भाष्य (खण्ड १,२) (वाचन)	भगवती भाष्य (खण्ड ३,४) (वाचन)	भगवती भाष्य (खण्ड ५,६,७)(वाचन)	गमा का थोकड़ा (कंठस्थ)
सप्तम	ओवाइयं, रायपसेणियं (वाचन)	जीवाजीवाभिगमे, जम्बुद्दीवपण्णत्ती(वाचन)	सूरपण्णत्ती, चंदपण्णत्ती, मिथ्याती री करणी री चौपई (वाचन)	आगमों व थोकड़ों की वाचिक प्रस्तुति, आचार्य भिक्षु के सिद्धान्तों की वाचिक प्रस्तुति

नोटः- • प्रस्तुत पाठ्यक्रम में अपेक्षानुसार संशोधन किया जा सकेगा।

- प्रस्तुत महाप्रज्ञ श्रुताराधना पाठ्यक्रम की निर्देशक मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी को मनोनीत किया गया है। गुरुकुलवासी और बहिर्विहारी साध्वियां व समणियां इस पाठ्यक्रम के संदर्भ में उनसे संपर्क कर सकती हैं। साधु और समण इस संदर्भ में मुनि कुमारश्रमणजी से सम्पर्क कर सकते हैं।

स्मारणा

- जिस कमरे, हॉल आदि में साधु-साध्वियों का प्रवास हो, वहां ए.सी. और कूलर का प्रयोग वर्जित रहे।

(अनुशासन संहिता--चारित्रात्मा समुदाय-१३/३/२१)

सुधारकर पढ़ें

विज्ञप्ति अंक ४७ में पृ. ११-१२ पर 'भिन्न सामाचारी में वाहन प्रयोग का प्रायश्चित्त' शीर्षक के अंतर्गत क्रमांक २१ पर प्रकाशित साध्वी प्रेरणाश्रीजी (चेन्नई) १५०६ का नाम न माना जाए।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार के लिए पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, ३ पोर्चुगीज चर्च स्टीट, कोलकाता ७०० ००१

मो. नं. ७०४४७७८८८८ Email : vigyapti@terapanthinfo.com

आनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाइल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला